Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 09, Issue 03, February 2020
ISSN:- 2348-0459 Available online at www.gjms.edwin.co.in

बलूचिस्तान में अलगाववादी आन्दोलन : मुद्दे एवं विवाद

प्रवीण सिंह
शोध छात्र रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सारांश

बलूचिस्तान पाकिस्तान के इस्लामिक गणराज्य के चार प्रान्तों में से एक है। अन्य तीन पंजाब, सिन्धु और खैबर पखतूनवा है। बलूचिस्तान 347190 वर्ग किमी क्षेत्रफल में फैला है। जो पाकिस्तान के कुल क्षेत्रफल का 43 प्रतिशत भाग है तथा आबादी के लिहाज से बड़ा की कुल जनसंख्या का मात्र 05 प्रतिशत है। यह प्रान्त उत्तर और उत्तर पश्चिम में अफगानिस्तान, दक्षिण पश्चिम में इरान, पंजाब, सिंध, खैबर पखतूनवा और उत्तर पूर्व में संघीय प्रशासित आदिवासी क्षेत्रों से अपनी सीमा साझा करता है। और दक्षिण में अरब सागर स्थित है।

शब्दकोशः– बलूचिस्तान पाकिस्तान अलगाववादी आन्दोलन

परिचयः– अफगानिस्तान और ईरान के बलूची इलाके में विद्रोह कम है और पाकिस्तान की स्थिति काफी खराब रही है। बलूचिस्तान में हिंसा और मानवाधिकारों के उल्लंघन के कारण यह दुनिया के सबसे अशान्त स्थानों में से एक है। बलूचिस्तान प्रकृति से सम्पन्न है। इसके पास देश की सबसे लंबी तटरेखा है और सबसे बड़ा प्राकृतिक गैस भण्डार है और इसमें कोयला, तेल, तांबा, सोना, सीसा, जस्ता जैसे संसाधनों की एक विशाल श्रृंखला है। भू–रणनीतिक और भू–राजनीतिक रूप से बलूचिस्तान पाकिस्तान का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह मध्य एशियाई देशों के ऊर्जा समृद्ध क्षेत्रों तक पहुँच प्रदान करता है। इसी कारण यह क्षेत्र बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाता है तथा इस क्षेत्र को दक्षिण एशिया एवं मध्य एशिया के गेट–वे के तौर पर देखा जाता है। भौगोलिक रूप में प्रान्त के मध्य और मध्य पूर्वी क्षेत्रों में पर्वत श्रृखलाएँ, पश्चिम में पहाड़ी क्षेत्र, तटीय क्षेत्र दक्षिण में और उत्तर–पश्चिम में रेगिस्तान क्षेत्र है। जलवायु की दृष्टि से यह 12 इंच की औसत वार्षिक वर्षा के साथ समशीतोष्ण क्षेत्र में स्थित है। लेकिन प्रान्त के कुछ क्षेत्रों में वर्षों तक वर्षा नहीं होती है। नतीजन केवल 10%भूमि पर खेती की जाती है। बड़ी संख्या में आबादी पशुपालन में लगी है। तटीय लोगों का जीवन समृद्ध है, क्योंकि वो मछली पकड़ने और बेचने का कारोबार करते हैं। बलूचिस्तान में कई जनजातियाँ हैं। लेकिन तीन प्रमुख जनजातियाँ बलूच, ब्राहवी और पस्तून। इन तीन प्रकारों को कई जनजातियों में विभागजित किया गया है। प्रत्येक जनजाति का नेतृत्व एक प्रमुख द्वारा किया जाता है। जिसे आमतौर पर सरदार के रूप में संबोधित किया जाता है।

बलूचिस्तान का इतिहासः– ऐतिहासिक रूप से बलूचिस्तान ने इतिहास के अलग–अलग समय पर भूमि और सत्ता के नियंत्रण के लिये संघर्ष एवं हिंसा देखी है। बलूचिस्तान का क्षेत्र काफी लम्बे समय तक फारसी, अफगान, ईरान, मुगल, सिख, ब्रिटिश और उस क्षेत्र के स्थानीय सरदारों के नियंत्रण में रहा है। आमतौर पर यह माना जाता है कि पारम्परिक बलूची काल 12वीं सदी में अस्तित्व में आया जब बलूच में शक्तिशाली जनजाति क्षेत्रों का गठन किया। बलूच को एक समूह में संगठित करने के प्रयासों में कलात के खान सबसे सफल साबित हुए हैं और कलात बलूच राष्ट्रवाद का केन्द्र रहा है। अहमद खान के रूप में एक ब्राहवी राजकुमार का नाम बलूचियों और ब्राहियों द्वारा बसाए गये भूमि के पर्याप्त हिस्से पर सत्ता का प्रयोग करने वाला पहला व्यक्ति था। 1616ई0 में उसन खुद को कलात का खान घोषित कर दिया और पड़ोसी बलूच जनजातियों के बसे हुए क्षेत्रों को हासिल करने के बाद खान–ए बलूची की उपाधि धारण की।

जब बलूचिस्तान ब्रिटिश नियंत्रण में आया तो बोलन दर्रे (बलूचिस्तान को अफगानिस्तान से जोड़ता था) को क्वेटा में दर के ऊपर एक मजबूत चौकी द्वारा संरक्षित किया गया था और पड़ोसी बलूच जनजातियों को उनके प्रमुख को ब्रिटिश सब्सिडी के माध्यम से नियंत्रित किया गया था। लेकिन अंग्रेजों ने कभी भी बलूचियों पर सीधे तौर पर शासन करने का प्रयास नहीं किया। क्योंकि यह प्रायः देखा गया है कि ब्रिटिश हुकुमत के जो भी क्षेत्र संसाधन सम्पन्न रहे हैं। अंग्रेज उन पर प्रत्यक्ष रूप से नियंत्रण ना करके, वहाँ के स्थानीय लोगों द्वारा संसाधन का दोहन करवाते थे तथा कर के रूप में मोटी रकम लेते थे।14 अगस्त को भारत से विभाजित हो के पाकिस्तान एक अलग एवं नया राष्ट्र बना और दुर्भाग्य बस बलूचिस्तान भौगोलिक रूप से पाकिस्तान के हिस्से में चला गया। परन्तु कलात के खान ने अपने राज्य को स्वतंत्र घोषित कर दिया लेकिन स्वतंत्र राज्य की यह खुशी बहुत कम समय तक थी है। क्योंकि 27 मार्च 1948 को पाकिस्तान के सशक्त बलों को कलात के खान के खिलाफ एक अभियान के लिए लाभबंद किया गया था और 28 मार्च 1948 को कलात के खान को पाकिस्तान ने गिरफ्तार करके बलूचिस्तान का अधिग्रहण कर लिया गया। यह भाग्य की एक कड़वी विडम्बना है कि मो0 अली जिन्ना नाम के जिस व्यक्ति ने कलात की संप्रभुता क लिये ब्रिटिश अधिकार के खिलाफ मुकदमा दायर किया। उसने स्वयं पाकिस्तान क्षेत्र में कलात को मिलाने का जबरन आदेश दिया।

अलगाववादी आंदोलन के प्रभावी कारकः– बलूच समुदाय के लोग जिस आजादी के लिये लड़ रहे हैं, उसका इतिहास काफी पुराना है। 1948 से लेकर अब तक बलूचिस्तान कम से कम पाँच बार पाकिस्तान की क्रूरता का शिकार हो चुका है। चाहे वो 1948, 1958, 1962, 1973 या 2004 से अब तक का दौर हो। बलूचिस्तान के लोग पूर्ण रूप से पाकिस्तान एवं उसकी मशीनरी के खिलाफ है। क्योंकि सबसे संसाधन सम्पन्न होने के बावजूद भी विकास की दर सबसे कम है। बलूचिस्तान के लोगों को सही तरीके से ना तो शिक्षा का लाभ, ना ही स्वास्थ्य आदि का लाभ मिल पाता है तथा पाकिस्तान के अस्तित्व में आने के बाद से ही बलूचियों को पाकिस्तान सुरक्षा बलों द्वारा प्रताड़ित किया जाता रहा है। 1948 से लेकर अब तक हजारों बलूचियों को मार दिया गया तथा अपहरण किया गया और बहुत से लोग दूसरे राष्ट्रों में विस्थापित होने पर मजबूर हुये। साधारणता देखा जा सकता है कि अपने ही मुल्क में उनके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया जाता है तथा और भी निम्न कारण है जिनकी वजह से बलूच अलगाववादी आंदोलन पर मजबूर हुए हैं–

बलूच लोगों का हाशियाकरणः–पाकिस्तान की एक बहुजातीय सोसाइटी में बलूच जैसे अल्पसंख्यक समूह सबसे अधिक पीड़ित है। राजनीति, नौकरशाही, शिक्षा प्रणाली सशक्त बलों आदि में लोगों की भागीदारी बहुत कम है। पाकिस्तान के अन्य राज्य की तुलना में बलूचिस्तान में स्कूल व कॉलेज कम है। पाकिस्तान की सेना में बलूचिस्तान की नगण्य भागीदारी है। और सेना पाकिस्तान की सबसे शक्तिशाली इकाई है। पंजाबजो आबादी का 40% प्रतिनिधित्व करते हैं और 90% सशक्त बलों का गठन करते हैं। पाकिस्तान में ही समाजशास्त्र के विषय में पढ़ाने के लिए उपयोग की जाने वाली पाठ्य पुस्तक में पाकिस्तानी बलूच को असभ्य, अनपढ़ और बर्बर बताया जाता है। **संसाधनों का दोहनः–** बलूचिस्तान प्रान्त प्राकृतिक संसाधनों से बहुत सम्बद्ध है। इसके पास देश की सबसे लम्बी तट रेखा है और सबसे बड़ा प्राकृतिक गैस भण्डार है और इसमें कोयला, जस्ता, सीसा, तांबा, सोना, तेल आदि जैसे संसाधनों की एक बड़ी श्रृंखला है। लेकिन इसका विकास सभी चार प्रान्तों में सबसे कम है। चीन को लीजपे जमीन और खनन का हिस्सा सौंपे जाने से बलूचियों में रोष है। संसाधनों के दोहन का एक और बड़ा उदाहरण यह है

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 09, Issue 03, February 2020
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

''यदि आप डेरा बुगती में सुई गैस'' क्षेत्र देखे तो यह पता चलता है कि उनके ही संसाधनों का दोहन करके उनके क्षेत्र को ना विकसित करके बल्कि अन्य क्षेत्रों का विकास किया जा रहा है। डेरा बुगती का क्षेत्र बलूचिस्तान में स्थित है, और इस जगह पर पाकिस्तान का सबसे बड़ा गैस भण्डार है लेकिन दुर्भाग्य यह है कि इसी क्षेत्र के लोगों को गैस पाइप लाइन तथा एल0पी0जी0 एवं सी0एन0जी0 प्राप्त करना कठिन है।**ग्वादर पोर्ट**:– ग्वादर बंदरगाह पाकिस्तान के लिये आर्थिक और सामरिक महत्व रखता है। यह एक गहरे समुद्र का बंदरगाह है। जो अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री नौवहन और तेल व्यापार मार्गों के जंक्शन पर स्थित है। इसे 2006 में विकास के लिये चीन को 40 वर्षों के लीज पे सौंप दिया गया। पिछले दशक की अवधि में ग्वादर में आवास, गोदामों, औद्योगिक और विनिर्माण परिसरों सहित पर्याप्त विकास हुआ। लेकिन इन सबसे स्थानीय लोगों को ज्यादा फायदा नहीं हो रहा है। हाल ही में तथा प्रायः देखते रहते हैं कि स्थानीय बलूच लोगों ने ग्वादर प्रोजेक्ट पर काम करने के दौरान चीनी कामगारों पर कई बार हमला किया है और कई मारे भी गये हैं। ऐसा इसलिये क्योंकि स्थानी बलूच ग्वादर के मुद्दे को ऐसे देखते हैं। जैसे कोई आपके घर में घूसता है और आपको बाहर निकाल देता हैं। और इसके बजाए किसी दूसरों को खड़ा कर देता है।

रॉबर्ट कापलान के साथ बातचीत के दौरान निसार बलूच ने टिप्पणी की ''हम उत्पीड़ित राष्ट्र है, लड़ने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है। पूरी दुनियाअब ग्वादर के बारे में बात कर रही है। चाहे वे ग्वादर को दुबई से चलाने की कितनी भी कोशिश कर ले। हम वहाँ काम नहीं करने देंगे। प्रतिरोध होगा। इन्हीं कारणों से पाकिस्तान के खिलाफ आंदोलन तेज होगा।

चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC):– चीन द्वारा ग्वादर बंदरगाह को चीनी प्राप्त जिनजियांग से जोड़ने के लिये सी पी ई सी का प्रस्ताव रखा गया था। परियोजना की अनुमानित लागत 46 अरब डॉलर है। इस परियोजना पर अप्रैल 2015 में पाकिस्तान और चीन पर हस्ताक्षर किये गये थे। सीपीईसी को अब चीन के बड़े और महत्वाकांक्षी वेल्ट एण्ड रोड लाइन पहल में शामिल कर लिया गया है और इसमें सड़क, एक्सप्रेस–वे की कई

परियोजनाएँ शामिल हैं। मोटरवे, राजमार्ग, मालगाड़ी सेवा, ऊर्जा परियोजनाएँ, सौर, पवनचक्की और जल विद्युत, ऑप्टिकल फाइबर और बुनियादी ढांचा आदि। बलूचिस्तान राष्ट्रवादियों ने बलूचिस्तान में चीनी उपस्थिति और निवेश परियोजना का विरोध किया है। क्योंकि बलूचियों को डर है कि निवेश की लहर जनसांख्यिकीय परिवर्तन लाएगी और उन्हें अपने ही प्रान्त में अल्पसंख्यक समूहों में बदल देगो। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि पाकिस्तान में चीन का अपना भू–राजनीतिक और भू–अर्थशास्त्रीय हित है। इसलिए चीन किसी भी कीमत पर CPEC परियोजना को सफल बनाना चाहता है। लेकिन इस बहुअरब डॉलर की परियोजना में एक और बात यह है कि स्थानीय बलूची लोगों को उतना लाभ नहीं मिला वे जितना उम्मीद करते थे। इसलिए उन्होंने इस परियोजना का विरोध किया और चीनी इंजीनियरों और श्रमिकों को समय–समय पर मारते रहते हैं। CPEC की 330 परियोजना में से केवल 08 बलूचिस्तान को आवंटित की गयी है। इस परियोजना आवंटन का मुख्य कारण यह है कि सड़क किसी भी तरह बलूचिस्तान से होकर ग्वादर गहरे बंदरगाह तक पहुँच जाये। बलूच लोगों और उनके नेताओं का कहना है कि हम CPEC परियोजना पर हर रोज हमला कर रहे हैं, क्योंकि इसका उद्देश्य बलूच आबादी को अल्पसंख्यक में बदलना और चीनीयों द्वारा लूटपाट करक संसाधनों को छीनना है। इसलिए CPEC भी बलूचिस्तान में अलगाववादी आंदोलन का एक मुख्य कारण है।

विकास का अभाव:– भू–रणनीतिक रूप से बलूचिस्तान का स्थान पकिस्तान के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। और बलूचिस्तान प्राकृतिक संसाधनों में बहुत समृद्ध हे। लेकिन विकास यहाँ सबसे कम है। कई बलूचिस्तान क्षेत्रों में अभी भी स्कूल, सड़क, अस्पताल आदि बुनियादी सुविधाओं की कमी का सामना करते हैं। क्योंकि पाकिस्तान की व्यवस्था यहाँ केवल उनके राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक लाभ के लिए काम करती है। उन्हें बलूच लोगों के कल्याण की कोई चिन्ता नहीं है। 2016 के मानव विकास सूचकांक के आकड़ों के अनुसार पंजाब 0.55 के एचडआई स्कोर के साथ सूची में सबसे ऊपर है। इसके बाद सिन्ध 0.51 के साथ खैबर पखतूनवा 0.48 के साथ, बलूचिस्तान 0.41 के साथ सबसे पीछे था। नीचे के 15 जिलों मेंसे 11 बलूचिस्तान क हैं, दो सिन्ध और 02 खैबर पखतूनवा से और पंजाब से कोई नहीं। 2008 में बलूचिस्तान की साक्षरता दर 24.8% है। जो दुनिया के सबसे गरीब देशों के बराबर है।

जनसांख्यिकीय पुनर्रचना:–बलूचिस्तान में पाँच बड़े सैन्य अभियान हुए है। लेकिन नवाब बुगती की मृत्यु के बाद बलूच गुरिल्ला अधिक संगठित और मजबूत है। विद्रोहियों के डर से किसी भी निवेशक ने बलूचिस्तान में बड़ी मात्रा में संसाधनों पर अपनी रूचि नहीं दिखाई, क्योंकि उन्हें डर था कि पाकिस्तान बलूच विद्रोहियों के खिलाफ सुरक्षा नहीं दे पाएगा। बलूच विद्रोहियों का मुकाबला करने के लिए पाकिस्तान सरकार ने जनसांख्यिकीय पुनर्रचना का कुचक्र रचा है। उन्होंने यह साबित करना शुरू कर दिया कि बलूच अपनी मातृभूमि में अल्पसंख्यक है। जहाँ पस्तून बहुमत में है। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये पाकिस्तान सरकार ने बलूचिस्तान में बसने के लिए अफगानिस्तान से पस्तूनों का आयात शुरू कर दिया। आजकल कई अफगान शरणार्थी बलूचिस्तान में बस गये है। और वे खुद को शरणार्थी नहीं मानते, उनके पास पाकिस्तानी पासपोर्ट है, और बलूचिस्तान की राजधानी क्वेटा में सम्पत्ति खरीद रहे हैं।

अलगाववादी संगठन के विभिन्न विचारधाराओं का उदय:– बड़ी संख्या में अगलाववादी संगठनों ने बलूचिस्तान में पाकिस्तान विरोधी स्थान को कवर किया है। उनकी भी अलग–अलग विचारधाराएँ हैं। कुछ आजादी के लिये लड़ना चाहते हैं। जबकि अन्य ग्रेटर बलूचिस्तान के लिये लड़ रहे हैं। विभिन्न समूहों का नेतृत्व विभिन्न कबीले के नेता कर रहे हैं। बलूचिस्तान लिबरेशन फ्रंट की स्थापना जुम्मा खानमारी ने 1964 में की थी। लेकिन आजकल इसका नेतृत्व डॉ अल्लाह नजर बलूच कर रहे हैं। यह सबसे प्रमुख संगठन है। जिसमें बड़े पदचिन्ह और महान लोकप्रियता प्राप्त है और लोकप्रियता का करण यह है कि यह अलगाववादी संगठन देश के अंदर से ही सारी गतिविधियों को संचालित करता है। जबकि बहुत से संगठन देश के बाहर से विरोध प्रदर्शन करते हैं तथा संगठनों के आपसी विचारधाराओं में मतभेद भी दिखता है।

निष्कर्ष:– बलूचिस्तान में संघर्ष की स्थिति बहद जटिल है। मूल रूप से संघर्ष के दो कारक प्रतीत होते हैं। एक ऐतिहासिक और दूसरा राजनीतिक, ऐतिहासिक कारक में जातीयता एवं अपनी पहचान की समस्या शामिल है। जबकि राजनीतिक कारक में निर्णय लेने के स्तर पर प्रतिनिधित्व की कमी, संसाधनों का असामान्य वितरण आदि। वे अपने आप को पाकिस्तान की संस्कृति, सभ्यता, प्रथाये एवं मान्यताओं आदि से अलग मानते हैं तथा यही उपर्युक्त कारण अलगाववादी आंदोलन के लिये जिम्मेदार प्रतीत होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. Bansal Alok, "Balochistan in Turmoil Pakistan at Crossorads" IDSa, Manas Poblications, New Delhi, 2nd Impression 2013.
2. Chari Sheshadri, "Azad Balochistan", Publishe by FINS, Mumbai, 2016.
3. Gehlot NS, Satsangi Anu, "Indo-Pak Relations : Twist and Turns from Partition to Agra Summit and Beyond", Deep and Deep Publications, New Delhi, 2004.
4. Heathcote TA, "Balochistan, the British and the Great Game-The Struggle for the Bolan Pass, Gateway to India", Pentagon Press, New Delhi, 2017, pp 8.
5. Jha NN, Singh Sudhir, "Modi's Foreign Policy : Challenges and Opportunities", Pentagon Press, New Delhi, 2016.
6. Kaplan Robert, "Monsoon The Indian Ocean and the Future of American Power" Random House Trade Paperbacks, New York, 2011.
7. Mohammad Yousaf, Mark Adkin, "Afghanistan : The Bear Trap : The defeat of a Super Power", Pen and Swor Books Ltd, Barnsley, UK, 2002 (First published 1992).